ग्रामीण भारत में डिजिटल मीडिया का प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Dr Priya Singh

Department of Sociology

Author Email: priyad.phil2016@gmail.com

शोध सारांश—प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण भारत में डिजिटल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है | इसमें द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से विश्लेषण कर डिजिटल मीडिया क्या है तथा डिजिटल मीडिया का ग्रामीण परिवेश पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है | वर्तमान समाज में डिजिटल मीडिया एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है जिसके माध्यम से बहुत सारी सूचनाओं, भावनाओं, विचारों आदि का आदान प्रदान किया जाता है | इस आभासी विश्व में युवा पीढ़ी अपना अधिक से अधिक समय व्यतीत करती है तथा ग्रामीण भारत में कृषि के क्षेत्र में अनेक प्रकार के परिवर्तन लाने में डिजिटल मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है | कृषिक व्यापारिक संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया हो अथवा ग्रामीण सामाजिक अंतःक्रिया की प्रक्रिया में परिवर्तन की बात हो डिजिटल मीडिया का योगदान नाकारा नहीं जा सकता | प्रस्तुत शोध पत्र में तकनीक के बढ़ते प्रयोग के कारन ग्रामीण क्षेत्र में जो डिजिटल डिवाइड की अवधारणा उभरकर आ रही है उसको भी विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है |

की-वर्ड्स:- डिजिटल मीडिया, ग्रामीण भारत, युवा पीढ़ी, कृषि|

I. प्रस्तावना

मनुष्य जीवन में सम्प्रेषण एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिसके माध्यम से वह अपनी भावनाओं , आवश्यकताओं और अन्य जरुरी बातों को आपस में साझा करता है अथवा आपस में एक दुसरे से महवपूर्ण विषयों पर जानकारी प्राप्त होती है | वर्तमान समय में डिजिटल मीडिया अथवा इन्टरनेट के माध्यम से यह साझा करने की प्रक्रिया व्यापक रुप ग्रहण कर चुकी है | फेसबुक, ट्विटर, whatsapp, instagram आदि के माध्यम से विशेष रूप से युवा पीढ़ी अपने विचारो, सूचनाओं यहाँ तक कि ब्लाग्स के माध्यम से अपने निजी जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों को सार्वजनिक करते हैं | इन प्लेटफॉर्म्स को आभासी विश्व के नाम से संबोधित किया जाता है जिसमे वास्तविक कुछ भी नही होता अथवा यह वास्तविक विश्व से बिल्कुल अलग विश्व है | आज के विश्व में व्यक्ति अपना अधिकांश खाली समय डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर ही व्यतीत कर रहा है विशेष रूप से युवा पीढ़ी फिर चाहे वह मनोरंजन के उद्देश्य से हो अथवा शिक्षा प्राप्ति, खरीददारी या अन्य उद्देश्यों से| डिजिटल मीडिया के आभासी विश्व में अधिकांश समय व्यतीत करने के कारन लोगों में एक अलग प्रकार का अकेलापन , तनाव तथा अन्य प्रकार की शारीरिक स्वस्थ्य समस्याएं देखी जा सकती हैं |

आधुनिक समाज में डिजिटल मीडिया हो अथवा अन्य आभासी प्लेटफॉर्म्स जो इन्टरनेट पर उपलब्ध कराये गए हैं उनके प्रयोग के बिना कोई भी व्यक्ति रह पाए ये असंभव सा हो गया है| क्यूंकि शासन से लेकर ऑनलाइन शौपिंग , बैंकिंग , मनोरंजन , शिक्षा आदि सभी के लिए एंड्राइड फ़ोन्स पर अनेकों एप्प्स उपलब्ध हैं | जिसमे एक लाग इन के माध्यम से अनेकों जटिल कार्य सरलता से संपन्न किये जा सकते हैं| डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के बढ़ते प्रयोग ने समाज में एक विस्तृत सामाजिक परिवर्तन को

दिशा प्रदान की है | जिसका विस्तार से विश्लेषण करना अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है | डिजिटल मीडिया का वास्तविक प्रकार्य लोगों के, समाज और देश के विकास के वास्तविक योगदान में निहित है|

II. ग्रामीण भारत और डिजिटल मीडिया

ग्रामीण भारत के सन्दर्भ में बात करें तो ग्रामीण क्षेत्र में इ-चौपाल के माध्यम से फसल सम्बंधित मूल्यों और उत्पादन सम्बंधित अन्य सूचनाएं ग्रामीण निवासियों तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया जाता है| इ-चौपाल के माध्यम से परंपरागत ग्रामीण भारतीय कृषिक व्यापारिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है| यह परिवर्तन छोटे आकार के ऋण और बिचौलियों की समाप्ति की प्रक्रिया में सरलता से देखा जा सकता है| अब छोटे किसान भी अपने उत्पाद को सीधा बाजार में विक्रय कर सकते हैं | यदि हम समावेशी ICT की दिशा में ग्रामीण भारतीय समाज को अग्रसर देखना चाहते हैं तो सर्वप्रथम इसे आजीविका की दिशा में होने वाले प्रयोग के सन्दर्भ में बढ़ावा देना होगा केवल टेक्नोलॉजी तक लोगों की पंहुच सरल और सुनिश्चित करने मात्र से उद्देश्य पूरा नहीं होता बल्कि टेक्नोलॉजी का प्रयोग क्यों और किसके द्वारा किया जा रहा है यह आरेखित करना भी अत्यंत आवश्यक है| ICT टूल्स की लोगों के बीच पहुँच के पश्चात इससे जुडी कुछ चुनौतियों, लाभ और हानि को समझना भी अत्यंत आवश्यक है | ICT टूल्स के प्रसार और प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ ही ये समझा जाने लगा कि सस्ती उपलब्धता के साथ यह स्वस्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में प्रगतिपूर्ण क्रांति लाने में सहायक सिद्ध होगा किन्तु ऐसा होता प्रतीत नहीं होता | ICT टूल्स से जुडी इन चुनौतियों को समझने के लिए लोगों द्वारा प्रयोग किये जाने की प्रवृत्ति का विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है | ICT टूल्स के प्रयोग को विकास की प्रक्रिया से जोड़कर देखने की प्रवृत्ति को विकसित करना होगा | ICT टेक्नोलॉजी के साथ स्थानीय स्तर पर होने वाली अंतःक्रिया की प्रक्रिया का मूल्याङ्कन अति आवश्यक कार्य है | यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण भारत वर्तमान समय में एक मोबाइल बाजार के सन्दर्भ में एक उभरता हुआ बाजार प्रदान कर रहा है जहा इन ICT टूल्स को उचित मूल्य पर उपलब्ध करा कर, ग्रामीण वासियों की आजीविका सम्बंधित अथवा कृषि उत्पादन सम्बंधित ज्ञान तक उनकी पहुँच सुनिश्चित की जा सकती है|

भारत में अभी भी कई जगहों पर डिजिटल डिवाइड सरलता से देखा जा सकता है| अनेक गाँव अथवा क्षेत्र ऐसे हैं जहा पर ब्रॉडबैंड सुविधा की गुणवत्तापूर्ण स्तर पर उपलब्ध नहीं है, वहीँ दूसरी ओर जहाँ यह सुविधा उपलब्ध है भी वहां लाग इसका सही दिशा में समुचित लाभ लेने से वंचित हो रहे हैं अथवा कुछ ऐसे भी लोगों का समूह है जो इस प्रकार से ICT टूल्स के प्रयोग को सर्वथा अनुपयोगी मानता है, जिसके पीछे अनेक प्रकार के कारन विद्यमान हैं | जैसे स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने में ICT टूल्स में एक जटिल प्रक्रिया विद्यमान होती है और इस प्रक्रिया तक सबकी पहुँच सुनिश्चितनहीं हो पाती है| इस प्रकार सामाजिक अंतःक्रिया की प्रक्रिया को परिवर्तित करने में ICT टूल्स की महत्वपूर्ण भूमिका है|

Morphy & Rose २०२१ के अनुसार कृषि और खाद्य उत्पादन में ICT को एक प्रमुख योगदान के रूप में देखा जा सकता है | विशेष रूप से सततीय कृषि के विकास में प्रगति हेतु सम्बन्धित सततीय कृषिक व्यवहार को बढ़ावा देने में ICT का समुचित उपयोग किया जा सकता है| ऐसी तकनीकें जो किसानों द्वारा पहले से प्रयोग की जा रही हैं और जिनके परिणाम सकारात्मक हैं इस प्रकार की तकनीकों तक अन्य किसानों की पहुँच उचित दरों पर उपलब्ध करना सुनिश्चित करना चाहिए | अनेक प्रकार की तकनीकों के प्रयोग से किसान अपरिचित होते हैं विशेष रुप से छोटे और मझोले किसान, अतः किसानों को इन तकनीकों के प्रयोग के सन्दर्भ में शिक्षा और ट्रेनिंग प्रदान करना अति आवश्यक कार्य है | ICT टूल्स के प्रयोग द्वारा किसानों को जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण परिवर्तन सम्बंधित पूर्व जानकारी समय से उपलब्ध करायी जा सकती है , इसके अलावा किस फसल में कितनी मात्रा तक जल और अन्य पोषण पहुँचाने की आवश्यकता है यह सूचना भी ससमय उपलब्ध करवाई जा सकती है | जिसके

माध्यम से खाद्य उत्पादन की प्रक्रिया में लागत की दर को कम करके सततीय खाद्य उत्पादन की प्रक्रिया में प्रगति की जा सकती है |

III. डिजिटल मीडिया के बढ़ते उपयोग से होने वाले नुकसान

- ऑनलाइन समय व्यतीत करने की प्रक्रिया में सूचना खोज की प्रक्रिया में बहुत अधिक समय अन्यथा खर्च हो जाना |
- न केवल डिजिटल मीडिया को जन समूह द्वारा आकार दिया जा रहा है बल्कि डिजिटल मीडिया खुद भी जन समूह के जीवन , विचार , सामाजिकता आदि को पर्याप्त रूप से प्रभावित कर रहा है|
- युवा पीढ़ी में डिजिटल मीडिया का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है चाहे वह मनोरन्जन के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक आर्थिक या फिर राजनीतिक प्रक्रिया के सन्दर्भ में |
- डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रयोग ने समाज में विखंडन की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है और लोगों में अकेलेपन की प्रवृत्ति विकसित हुयी है |

IV. निष्कर्ष

डिजिटल मीडिया की भूमिका आधुनिक विश्व में उत्तरोत्तर बढ़ रही है| यदि यह कहें कि आधुनिक समाज और डिजिटल मीडिया एक दुसरे के पर्याय हैं तो यह कहना अनुचित नहीं होगा | ग्रामीण क्षेत्र में व्यापक सामाजिक आर्थिक परिवर्तन लाने में डिजिटल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है | देश की युवा पीढ़ी की एंड्राइड फोंस पर बढ़ती निर्भरता के साथ साथ शासन सम्बंधित दिशा निर्देश हो अथवा ऑनलाइन शौपिंग , बैंकिंग , शिक्षा प्राप्ति या अन्य कोई उद्देश्य एक क्लिक के माध्यम से व्यक्ति की आसान पहुँच को सुनिश्चित करने में डिजिटल मीडिया का योगदान महत्वपूर्ण है | लेकिन ICT टूल्स ने ग्रामीण परिदृश्य में एक तरह की विषमता को भी जन्म दिया है जिसे विद्वानों ने डिजिटल डिवाइड की संज्ञा दी है | एक तरफ ऐसे भी क्षेत्र हैं जहा इन्टरनेट की उपलब्धता न के बराबर है तथा डिजिटल डिवाइस की अधिकांश तक पहुँच होने के बाद भी सब तक पहुँच नहीं है जिसके कारण ग्रामीण परिवेश में एक तरह की विषमता को आसानी से देखा जा सकता है | इसके अलावा पर्याप्त ज्ञान का भी आभाव है जो इन उपकरणों को चलाने हेतु आवश्यक है | ज्ञान के अलावा उपयोगी ज्ञान शब्द का प्रयोग करना उचित होगा जो की इन उपकरणों के प्रयोग से उचित दिशा में सकारत्मक परिणाम प्राप्त करके की जा सकती है| अतः ग्रामीण परिवेश में डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रयोग पर विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Murphy & Rose .2021. The Sustainable Agriculture Transition: How to make the most of transformative technology. *International Institute for Sustainable Development.* (https://www.jstor.org/stable/resrep30873).
2. Garside Ben. 2009. Village voice: towards inclusive information technologies. *International Institute for Environment and Development.* URL: http://www.jstor.com/stable/resrep01425.
3. Parthsarthi & Srinivas et al. 2012. *Mapping Digital Media: India.* Open society foundations.
4. Global Commission on Internet Governance. 2017. *The Shifting Geopolitics of Internet Access: From Broadband and Net Neutrality to Zero-rating.* http://www.jstor.com/stable/resrep05240.7.
5. Manning Robert A. 2020. *Emerging Technologies: New Challenges to Global Stability.* Atlantic council. https://www.jstor.org/stable/resrep26000.

6. Ratnan G.G. 2022. Significance of social media and its revolution In India. *International journal of English and studies.*vol.4, issue.2. 127-132.